भविष्यद्वाणी समझना

फ्रैंकलीन द्वारा तैयार नोट्स

1 कुरिन्थियों 14:1 ''प्रेम का अनुकरण करो, और आत्मिक वरदानों की भी धुन में रहो, विशेष करके यह कि भविष्यद्वाणी करो।''

1. भविष्यद्वाणी के विषय में तथ्य

युनानी शब्द : प्रोफ़िटेया (प्रो – सामने ; फ़ैमी – बोलना) इस बात को प्रदर्शित करता है ''परमेश्वर के मन और विचार को सामने लाना।''

पुराने नियम की भविष्यद्वाणी की सेवा मूलतः भविष्य में होने वाली घटनाओं को पहले से बता देना था।

> मीका 5:2 ''हे बैतलहम एप्राता, यदि तू ऐसा छोटा है कि यहूदा के हज़ारों में गिना नहीं जाता, तौभी तुझ में से मेरे लिए एक पुरुष निकलेगा, जो इस्राएलियों में प्रभुता करने वाला होगा ; और उसका निकलना प्राचीन काल से, वरन् अनादि काल से होता आया है।''

तथा नए नियम में कभी – कभी हुआ है (यूहन्ना 11:51)।

यूहन्ना 11:51 ''यह बात उसने अपनी ओर से न कही, परन्तु उस वर्ष का महायाजक होकर भविष्यद्वाणी की, कि यीशु उस जाति के लिए मरेगा।''

भविष्यद्वाणी उस बात की घोषणा है जो स्वाभाविक तौर से जानी नहीं जा सकती।

> मत्ती 26:68 '' हे मसीह, हम से भविष्यद्वाणी करके कह कि किसने तुझे मारा ?''

यह परमेश्वर की इच्छा को सामने बता देना है, चाहे उसका संदर्भ भूतकाल से हो या वर्त्तमान से या फिर भविष्य से।

उत्पत्ति 20:7 ; व्यवस्थाविवरण 18:18 ; प्रकाशितवाक्य 10:11 ; 11:3

नए नियम में यह उन्नति देने, उपदेश देने, तथा तसल्ली देने के लिए है।

> 1 कुरिन्थियों 14:3 ''परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह मनुष्यों से उन्नति और उपदेश और शान्ति की बातें कहता है।''

नए नियम में भविष्यकथन को केई बार प्रकाशन भी कहा गया है। जैसे बाइबल की अन्तिम पुस्तक मूलतः भविष्यद्वाणी है और इसे ''यूहन्ना का प्रकाशितवाक्य'' कहा गया है।

इस बदलाव का एक प्रमुख कारण याजकीय पद में परिवर्त्तन है।

- ★ पुराने नियम में लोग परमेश्वर से याजक के द्वारा पूछते थे।
- ★ नए नियम में समस्त विश्वासी राज – पदधारी याजकों के समाज के अंग हैं, तथा वे व्यक्तिगत रीति से परमेश्वर तक पहुंच सकते हैं।

2 पतरस 2:9 ''पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज – पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिए कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अदभुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो।''

चौथी शताब्दी तक बाइबल हमारे पास नहीं थी। आज विश्वासी अपनी आत्मिक मार्गदर्शन के लिए बाइबल की ओर जा सकते हैं। लोग मसीही सेवक के पास सलाह के लिए जा सकते हैं तथा मार्गदर्शन भविष्यद्वाणी से भी आ सकता है।

- ★ प्रेरितों के काम 21:10–13

अक्सर भविष्यद्वाणी दूसरे वरदानों के वरदान के साथ आती हैं :

- ★ बुद्धि की बातें, ज्ञान की बातें, आत्माओं की परख का वरदान।
  प्रेरितों के काम 13:8–12 ; 16:16–18
- ★ चंगाई प्रेरितों के काम 14:8–10

2. भविष्यद्वाणी कार्य में अलौकिक है।

नए नियम में शब्द ' प्रचार' ( ), शब्द 'भविष्यद्वाणी' ( ) से भिन्न है। प्रचार में ध्यानपूर्वक तैयारी की आवश्यकता है(प्रार्थना, अध्ययन, पवित्र आत्मा की अगुवाई)। किसी को भविष्यद्वाणी में सन्देश देने जैसी तैयारी करने की आवश्यकता नहीं है, सिवाय पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित किए जाने और उसके वचन के पहुंचने की प्रतिक्षा के। पहले केवल कुछ शब्द आते हैं तथा बाकि के शब्द जब व्यक्ति बोलने लगता है तो स्वयं आ जाते हैं।

भविष्यद्वाणी – परमेश्वर का व्यक्ति से अलौकिक रुप से बात करना – प्रचार के दौरान भी सामने आ सकता है। परन्तु यह वो नहीं है जिसकी तैयारी की जाए।

2 पतरस 1:20–21 '' पर पहले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी के अपने विचार – धारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती, (21) क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।

अकसर , जब पवित्र आत्मा व्यक्ति पर आती है तब भविष्यद्वाणी होती है या ये उससे सम्बन्ध रखती है।

- ★ गिनती 11:17, 25–29 एलदाद और मेदाद
- ★ 1 शमूएल 10:6, 9, 10 शाऊल

पवित्र आत्मा अस्थायी रीति से अविश्वासी पर या उस व्यक्ति पर जो परमेश्वर की इच्छा में नहीं है, आ सकती है। अतः आत्मा के वरदान का कार्य इस बात का प्रमाण नहीं है कि व्यक्ति का हृदय परमेश्वर के साथ सही है।

- ★ काइफा की भविष्यद्वाणी : यूहन्ना 11: 49 – 52
- ★ शाऊल के दूत 1 शमूएल 19:20 – 23
- ★ यहूदा इस्करियोती ने बिमारों को चंगा किया और दुष्ट आत्माओं को निकाला। प्रेरितों के काम 1:17, 25 ।।

यह भी सम्भव है कि भविष्यद्वाणी अविश्वासी के द्वारा आए, जो पवित्र आत्मा के द्वारा भविष्यद्वाणी न करे परन्तु किसी अन्य के द्वारा या दुष्ट आत्मा द्वारा करे, चाहे वे प्रभु यीशु मसीह के भविष्यद्वक्ता होने की बात या दावा करे।

- ★ इसकी पुष्टि यीशु मसीह के शब्दों द्वारा होती है : मत्ती 7:22–23

इसलिए, हमें भविष्यद्वाणी या अन्य वरदानो के स्रोत और वैधता के बारे में **बहुत सावधान** रहने की आवश्यकता है।

- ★ 1 कुरिन्थियों 14:29 "भविष्यद्वक्ताओं में से दो या तीन बोलें, और शेष लोग उसके वचन को परखें।

सभी भविष्यद्वाणी कलीसिया के प्राचीनों और आत्मिक अगुवों द्वारा परखी जानी चाहिए। भविष्यद्वाणी कभी भी बाइबल में लिखे गए वचन के साथ असहमत नहीं होगी।

किसी भविष्यद्वक्ता की विश्वासयोग्यता और उसको परखने का सबसे अच्छा तरीका है, जिस तरीके से वह परमेश्वर के वचन को जानता, अध्ययन करता और उसके अनुसार रहता है।

- ★ 1 कुरिन्थियों 14:37–38 "यदि कोई मनुष्य अपने आपको भविष्यद्वक्ता या आत्मिक जन समझे, तो यह जान ले कि जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूं, वे प्रभु की आज्ञाएं हैं। **परन्तु यदि कोई यह न मानें, तो उसको भी न मानो।"**

3. झूठे भविष्यद्वक्ता और झूठी भविष्यद्वाणियां

1 यूहन्ना 4:1–3 " हे प्रियों, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो, वरन् आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं ; क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं। (2) परमेश्वर का आत्मा तुम इस रीति से पहचान सकते हो : जो आत्मा मान लेती है कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया है वह परमेश्वर की ओर से है, (3) और जो आत्मा यीशु को नहीं मानती, वह परमेश्वर की ओर से नहीं ; और वही तो मसीह के विरोधी की आत्मा है, जिसकी चर्चा तुम सुन चुके हो कि वह आने वाला है, और अब भी जगत में है।

भविष्यद्वाणी की एक जांच :
व्यवस्थाविवरण 18:22 '' जब कोई नबी यहोवा के नाम से कुछ कहे, तब यदि वह वचन न घटे और पूरा न हो जाए, तो वह वचन यहोवा का कहा हुआ नहीं ; परन्तु उस नबी ने वह बात अभिमान करके कही है, तू उससे भय न खाना।''

4. भविष्यद्वाणी की सीमाएं

1 कुरिन्थियों 13:9 ''क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है, और हमारी भविष्यद्वाणी अधूरी।''

भविष्यद्वाणी परखने का अच्छा माप, भविष्यद्वाणी बोलने वाले की ,बोले गए लोगों के प्रति करुणा, देख-भाल और सुधी लेने के द्वारा है (1 कुरि 13:1-3)। कोई भी भविष्यद्वाणी जो एक नया सिद्धान्त प्रस्तुत करे तथा जो बाइबल की सहमति में न हो तो उसे नकार देना चाहिए, बात करनी चाहिए और सही कर देना चाहिए। जो सिद्धान्त सिखाए जाएं वे परमेश्वर के वचन से हों न कि 'प्रकाशन' से। वचन को हल्का सा मोड़ने से ही बहुत से गलत पंथ आरम्भ हुए हैं।

आज हमारी कलीसिया को कष्ट देने वाले बहुत से झूठे सिद्धान्तों का मूल स्रोत कुछ समझा जाने वाला 'प्रकाशन' है। बहुत सी कलीसियाएं झूठी भविष्यद्वाणी की वजह से हुए लड़ाई झगड़ों के कारण टूट गई हैं। मनुष्य के दिमाग की भविष्यद्वाणी में प्रवेश करने की सम्भावना नए प्रकाशन को सामने लाती है, वरदान को इस उद्देश्य के लिए इस्तेमाल किए जाने से बहुत बड़ा खतरा है।

> 2 तीमुथियुस 3:16-17 ''सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है, और उपदेश, और समझाने, और सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है। (17) ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।''

पवित्र आत्मा पवित्रशास्त्र में कुछ जोड़ता नहीं है। व्यक्ति को पूर्ण तत्पर बनाने के लिए पवित्र शास्त्र प्रयाप्त है। तौभी भविष्यद्वाणी का वरदान सत्य पर ज़ोर दे सकता या उसे प्रगट कर सकता है जो बोले गए जन की आवश्यकता के लिए महत्वपूर्ण हो।

प्रकाशन की सही भविष्यद्वाणी का उदाहरण है :

- ★ प्रेरितों के काम 11:27-30 प्रारम्भिक कलीसिया अकाल के लिए अपने को तैयार कर सकी।
- ★ प्रेरितों के काम 16:9-10 पौलुस को मकिदुनिया जाने की अगुवाई हुई।
- ★ प्रेरितों के काम 20:23 ; 21:10-13 पौलुस को चेतावनी मिली कि यरुशलेम में उसके साथ क्या होने वाला है।
- ★ 1 कुरिन्थियों 14:26 यह बतलाती है कि यकीनन प्रकाशन का कलीसिया की आम सेविकाई में स्थान है, परन्तु सिद्धान्त स्थापित करने में नहीं।

5. भविष्यद्वाणी कर रहे जन की परिपक्वता पर भविष्यद्वाणी की गहराई और गुणवत्ता निर्भर रहती है।

1 कुरिन्थियों 14:31 " तुम सब एक एक कर के भविष्यद्वाणी कर सकते हो, ताकि सब सीखें और सब शान्ति पाएं।"

★ सीखने वालों के प्रति धीरज का व्यवहार करना चाहिए।

★ हमें यह जानना चाहिए कि जब कोई व्यक्ति भविष्यद्वाणी या अनुवाद कर रहा है तो यह केवल परमेश्वर का बोलना नहीं है – नहीं तो आज्ञा देने और सिखाने की आवश्यकता नहीं होती जैसा 1 कुरिन्थियों 14:31 में कहा गया है। परमेश्वर प्रेरणा देता है तब व्यक्ति अपनी बुद्धि के साथ, अपने शब्दों में उसे सामने लाता है। यह सिद्ध परमेश्वर और भ्रमशील मनुष्य का सम्मिश्रण है। फिर इसलिए कारण, भविष्यद्वाणी को सावधानी से तौलना और परखना चाहिए क्योंकि व्यक्ति की बुद्धि आसानी से परे जा सकती है तथा प्रभु के शब्दों में जोड़– तोड़ कर सकती है।

★ पद 32 में लिखा है : "भविष्यद्वक्ताओं की आत्मा भविष्यद्वक्ताओं के वश में है।" इसका अर्थ यह है कि भविष्यद्वाणी करने वाले जन नियंत्रण में हैं और उस सब का जो वह कहता और करता है ज़िम्मेवार हैं। वे पूर्णतः पवित्र आत्मा द्वारा नियंत्रण में नहीं होते। व्यक्ति जो करता है, जो वह बोलता है तथा जैसे वह बोलता है अपने वश में रहता है। इसलिए फिर से, भविष्यद्वाणी सावधानी से तौलना और परखना चाहिए।

भविष्यद्वाणी करने की योग्यता सबके लिए उपलब्ध है। सबके पास पवित्र आत्मा है।

★ प्रेरितों के काम 2:17–18 "परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा, और तुम्हारे बेटे और बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे। (18) वरन् मैं अपने दासों और दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उंडेलूंगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे।"

हलांकि केवल कुछ ही के पास यह 'वरदान' है (रोमियों 12:4–6), तथा इसका प्रयोग सभा में परिपक्व और ग्रहणयोग्य तरीके से करना चाहिए।

6. भविष्यद्वाणी का उद्देश्य

प्रकाशितवाक्य 19:10 "यीशु की गवाही भविष्यद्वाणी की आत्मा है।"(BSI अनुवाद)
प्रकाशितवाक्य 19:10 "भविष्यद्वाणी का सत्त्व यीशु की स्पष्ट गवाही देना है।" (अन्य अनुवाद)

भविष्यद्वाणी का उद्देश्य बोले गए लोग या लोगों को यीशु के प्रेम, दया, देख-भाल और उद्धार से परिचित कराना है।

1 कुरिन्थियों 14:3-5 " परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह मनुष्यों से **उन्नति** और **उपदेश** और **शान्ति** की बातें कहता है। (4) जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह अपनी ही उन्नति करता है ; परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह कलीसिया की उन्नति करता है। (5) मैं चाहता हूं कि तुम सब अन्य भाषा में बात करो परन्तु इससे अधिक यह चाहता हूं कि भविष्यद्वाणी करो : क्योंकि यदि अन्य भाषाएं बोलनेवाला कलीसिया की उन्नति के लिए अनुवाद न करे तो भविष्यद्वाणी करने वाला उससे बढ़ कर है।"

7. भविष्यद्वाणी उन्नति करती है

1 कुरिन्थियों 14:4 "जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह अपनी ही उन्नति करता है ; परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह कलीसिया की **उन्नति** करता है।"

ओइकोडोमे (युनानी) स्ट्रोंग शब्दकोश (3619) के अनुसार यह दो शब्दों की सन्धी है:

3624	ओइकोस	-	घर या मन्दिर
1430	डोमा	-	निर्माण करना या बनाना

उन्नति - किसी व्यक्ति से इस तरह से बोलना जिससे उसको आत्मिक, नैतिक या बौद्धिक प्रोत्साहन मिले।

रोमियों 14:19 "इसलिए हम उन बातों में लगे रहें जिनसे मेल मिलाप और एक दूसरे का सुधार(ओइकोडोमे) हो।"

8. भविष्यद्वाणी उपदेश देती है।

पाराक्लेसिस (युनानी)

उपदेश देना - ज़ोरदार, अकसर हिला देने वाले शब्दों, चेतावनी, सलाह या आग्रह के द्वारा प्रेरित करना।

1 कुरिन्थियों 1:10 ; 4:16	1 थिस्सलुनीकियों 4:1	2 थिस्सलुनीकियों 3:12
2 तीमुथियुस 4:2	तीतुस 1:9 ; 2:15	1 पतरस 5:1

9. भविष्यद्वाणी शान्ति या तसल्ली देती है

पारामुथिया (युनानी)
शान्ति देना – क्लेशों और कष्ट के दिनों में सान्त्वना देना, दिलासा देना, आराम देना, राहत देना।

> 2 कुरिन्थियों 1:3–6 ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जो दया का पिता और सब प्रकार की शान्ति का परमेश्वर है। वह हमारे सब क्लेशों में शान्ति देता है, ताकि हम उस शान्ति के कारण जो परमेश्वर हमें देता है, उन्हें शान्ति भी दे सकें जो किसी प्रकार के क्लेश में हों। क्योंकि जैसे मसीह के दःखों में हम सहभागी होते हैं, वैसे ही हम शान्ति में भी मसीह के द्वारा अधिक सहभागी होते हैं।

दुःख और क्लेशों की एक निश्चित मात्रा प्रत्येक मसीही के जीवन में आती है तथा इसमें शुद्ध करने और परिपक्व करने का प्रभाव होता है।

कुरिन्थियों की कलीसिया में एक व्यक्ति जिसने पाप किया था, उसके लिए पौलुस कहता है, ''उसका अपराध क्षमा करो और शान्ति दो, न हो कि ऐसा मनुष्य बहुत उदासी में डूब जाए।'' 2 कुरिन्थियों 2:7 ।।

बड़े क्लेशों से होकर जा रहे लोगों के लिए भविष्यद्वाणी चंगाई देने वाली दवा के समान है। दुःख और क्लेशों के अनुभव से गुज़र रहे लोगों के लिए परमेश्वर के द्वारा दिए गए यह शब्द शान्ति और तसल्ली लाते है।

10. भविष्यद्वाणी पापियों को कायल करती है।

1 कुरिन्थियों 14:24–25 ''यदि सब नबूवत करें तथा कोई अविश्वासी या अनजान व्यक्ति प्रवेश करे तो सबके द्वारा वह कायल किया जाएगा और परखा जाएगा, (25) उसके हृदय के भेद प्रकट हो जाएंगे, तब वह मुंह के बल गिरकर परमेश्वर की आराधना करेगा और मान लेगा कि सचमुच परमेश्वर तुम्हारे मध्य है।''

भविष्यद्वाणी विश्वासी को आशिष देती और पापियों को कायल करती है। यह अविश्वासी को यह एहसास दिलाने का कारण है कि कोई अलौकिक घटना घटी है और प्रभु परमेश्वर हमारे साथ है। भविष्यद्वाणी में कुछ, तीर के समान निशाने पर लगेगा और अविश्वासी को यह महसूस होगा कि परमेश्वर सीधा उससे बात–चीत कर रहे हैं।

हमें यह स्मरण रखना है कि कायल होना, मन फिराना नहीं है। भविष्यद्वाणी पापियों का परिवर्त्तन करने लिए प्रयाप्त नहीं है। किसी व्यक्ति को वास्तव में समर्पण के निर्णय पर पहुंचाने और यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता के रुप में ग्रहण करने तथा उसे प्रभु जान कर उसकी आज्ञा मानने के लिए सुसमाचार का बताया जाना आवश्यक है।

11. अन्तिम शब्द

1 कुरिन्थियों 13:8 – 14:1

प्रेम कभी टलता नहीं; भविष्यद्वाणियां हों, तो समाप्त हो जाएंगी ; भाषाएं हों, तो जाती रहेंगी ; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा। क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है और हमारी भविष्यद्वाणी अधूरी है। परन्तु जब सर्व-सिद्ध आएगा तो अधूरापन मिट जाएगा। जब मैं बालक था तो बालक के समान बोलता, बालक के समान सोचता और बालक के समान समझता था, परन्तु जब सयाना हुआ तब बालकपन की बातें छोड़ दीं। अभी तो हमें दर्पण में धंधला स दिखाई पड़ता है, परन्तु उस समय आमने सामने देखेंगे ; इस समय मेरा ज्ञान अधूरा है, परन्तु उस समय पूर्ण रुप से जानूंगा, जैसा मैं स्वंय भी पूर्णरुप से जाना गया हूं। पर अब विश्वास, आशा, प्रेम, ये तीनों स्थायी हैं, परन्तु इनमें सबसे बड़ा प्रेम है। प्रेम का पीछा करो और आत्मिक वरदानों की धुन में रहो, विशेषकर यह कि तुम भविष्यद्वाणी करो।